International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197
Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 966-968

भारत के प्रमुख तीर्थों में कुरुक्षेत्र का महत्त्व निरूपण

डॉ० पुरुषोत्तम शर्मा
Teacher, Government Middle School, Dramani Kathua, Jammu and Kashmir, India

प्रस्तावना

प्राचीन काल से अर्वाचीन काल तक भारतवर्ष तीर्थ स्थली के रूप में विश्व विख्यात है। इस देश में अनेकों स्थल तीर्थों के रूप में प्रसिद्ध हैं। जिन में प्रमुख हैं– प्रयाग, पुष्कर, वाराणसी, गया, मथुरा, द्वारिका एवं कुरुक्षेत्र। अन्य स्थल जहाँ आध्यात्मिकता के कारण विश्व में जाने जाते हैं, वही कुरुक्षेत्र महाभारत नामक युद्ध के कारण से जाना जाता है। आज यह स्थल प्राचीनकाल के हस्तिनापुर, लेकिन अर्वाचीन काल में दिल्ली नामक राजधानी के समीप हरियाणा प्रदेश के अन्तर्गत आता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार सरस्वती नदी का उद्‌गम स्थल कुरुक्षेत्र ही माना जाता है। कुरुक्षेत्र शब्द की व्युत्पत्ति है – ''कुत्सितं रोतिति कुरु पापं तस्य क्षेपनात् त्रायते' इति कुरुक्षेत्रम्। 'विष्णु पुराण' में इसे धर्मक्षेत्रीय स्थान माना है तथा 'वायुपुराण' की यह मान्यता है कि जहाँ स्नान एवं उपवास करने से मानव पितृ ऋण से मुक्त हो जाता है।

'शतपथ ब्राह्मण' के अनुसार देवताओं ने कुरुक्षेत्र में यज्ञ सम्पन्न किया था। अतएव इसलिए भी यह अत्यन्त पवित्र माना जाता हैं जबकि ऐतिहासिक विवरणों के अनुसार इसी स्थल पर पाण्डवों एवं कौरवों के मध्य भयंकर संग्राम हुआ था एवं अर्जुन जब अपने बन्धुबान्धवों को मारने के लिए उद्यत हो रहा था तब भगवान् श्री कृष्ण ने उन्हें अपने विश्व रूप का दर्शन कराकर 'श्रीमद्‌भागवत् गीता' जैस यथार्थ ज्ञान की शिक्षा देकर उन्हें यह समझाने का प्रयास भी किया था कि वास्तव में कर्म ही धर्म है और जीवात्मा परमात्मा का एक अंश मात्र ही है। वहीं महाभारत के 'वनपर्व' में यह वर्णन मिलता है कि जो व्यक्ति कुरुक्षेत्र जाते है या वहाँ पर निवास करते है उन्हें सम्पूर्ण पापों से मुक्ति मिल जाती है। इस रूप में भारत के प्रमुख तीर्थों में कुरुक्षेत्र का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। यदि भारत वर्ष के प्रमुख तीर्थों की बात की जाए, तो प्रमुख तीर्थों में प्रयाग, वाराणसी, काशी, गया, मथुरा, पुष्कर, द्वारिका, एवं कुरुक्षेत्र में स्थित तीर्थ भी प्रमुख तीर्थों में अग्रगण्य है।

1. प्रयाग

ब्रह्मा के प्रकृष्ट यज्ञ करने के कारण इस स्थान को प्राचीन काल से जाना जाता है जो आज उत्तर प्रदेश में स्थित इलाहावाद के रूप में विश्रुत है। 'मत्स्य पुराण' में वर्णन मिलता कि पृथ्वी पर साठ करोड़ दस सहस्र तीर्थ माने गए हैं। उन सभी की संस्थिति इस प्रयाग तीर्थ में है।[1] सभी तीर्थों में कतिपय विशेषताएँ है, पर बुद्धिमान् मनुष्य प्रयाग तीर्थ को विशेष रूप से अर्चित करते हैं। ब्रह्मा भी इस तीर्थ राज का नित्य स्मरण करते हैं प्रयाग तीर्थ राज को प्राप्त कर मनुष्य को किसी अन्य वस्तु की कामना नहीं रहती[2] दुःखी और दरिद्र मनुष्यों के कल्याणार्थ प्रयाग ही एकमात्र तीर्थ है।

यदि किसी रोग से अक्रान्त मनुष्य, दीन अथवा बृद्ध हो, वह मनुष्य गंगा–यमुना के संगम पर प्राण–त्यागने से स्वर्गलोक को प्राप्त होता है। पुण्य–क्षीण होने पर भी वह स्वर्गच्युत होकर समृद्ध कुल में जन्म ग्रहण करता है।[3] 'प्रयाग' का वर्णन वायु और ब्रह्माण्ड़ पुराणों में भी मिलता है। इसी की महत्ता प्रतिपादित करते हुए यहाँ का श्राद्ध अक्षय माना गया है –

भागीरथ्यां प्रयागे च नित्यमक्षयमश्नुते।[4]

आलोचित पुराणों में वर्णित 'प्रयाग' की महत्ता का समर्थन अन्य ग्रन्थों से भी किया जा सकता है। उदाहरणार्थ :– महाभारत में वर्णन आया है कि माघ मास में 'प्रयाग' तीन करोड़ दस सहस्र तीर्थों का संगम बनता है। इस अवसर पर प्रयाग में स्नान से मनुष्य पाप रहित होकर स्वर्ग प्राप्त करता है।[5] कविकुलगुरु कालिदास का कथन है कि गंगा–यमुना के संगम पर अभिषेक करने से मनुष्य पवित्र होकर तत्त्वज्ञान के बिना भी शरीर बन्धन से मुक्त हो जाते हैं।[6]

2. वाराणसी

वाराणसी की महत्ता स्पष्ट करते हुए ''मत्स्य पुराण'' में इसे प्रयाग की अपेक्षा भी श्रेष्ठ माना गया है। इसी प्रसङ्‌ग में विवेचित है कि नैमिष, कुरुक्षेत्र, गंगाद्वार, तथा पुष्कर तीर्थों के सेवन तथा स्नान से मोक्ष नहीं मिलता, पर इस तीर्थ की विशेषता यह है कि यहाँ मोक्ष सुलभ है –

नैमिषेऽथ कुरुक्षेत्रे गंगाद्वारे च पुष्करे।
स्नानात्संवेविताद्वादपि न मोक्षः प्राप्यते यतः।
इह संप्राप्यते येन तत एतद्विशिष्यते।।[7]

वाराणसी में सम्पन्न जप, दान, यज्ञ, तपस्या, ध्यान तथा अध्ययन आदि कमी नष्ट नहीं होते है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, वर्णसंकर, कृमि, म्लेच्छ, पाप योनि में उत्पन्न नीच मनुष्य, कीट, पशु तथा पक्षी काल के प्रभाव से यदि अविमुक्त क्षेत्र में शरीर–त्याग करते हैं, तो उन्हें शिव की पुरी का आनन्द मिलता है।[8] पृथ्वीतल पर मनुष्य को बिना योग से मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती, पर अविमुक्तवासी को योग तथा मोक्ष दोनों एक साथ सुलभ होते हैं। 'वाराणसी' की महत्ता 'वायु' और 'ब्रह्माण्ड' पुराणों में भी व्यक्त की गई है। इनमें विवेचित है कि वाराणसी में योगेश्वर शंकर का निवास नित्य रहता है। यहाँ श्राद्ध करने से अक्षय जल की प्राप्ति होती है।[9] वाराणसी की महत्ता का प्रतिपादन 'महाभारत' से भी होता है, जिसके अनुसार इस क्षेत्र का दर्शनमात्र ब्रह्महत्या का निवारक होता है।[10]

3. गया

''वायु पुराण'' का कथन है कि 'गया तीर्थ' सभी देशों में, सभी तीर्थों की अपेक्षा श्रेष्ठ है। ब्रह्महत्या, मदिरापान, चौरकार्य, गुरुभार्या समागम तथा पापात्माओं के संसर्ग से उत्पन्न होने वाले सभी पाप

'गया' में श्राद्ध करने से नष्ट हो जाते है। यदि मनुष्य एक बार भी गया की यात्रा तथा इस तीर्थ में पिण्ड़दान करे तो जीवन में उसके लिए कोई वस्तु दुर्लभ नहीं है –

सकृद्गयाभिगमनं सकृत्पिण्डस्य पातनम्।
दुर्लभं किं पुनर्नितयमस्मिन्नेव व्यवस्थितौ।।[11]

गयासुर ने विष्णु आदि देवताओं से वरदान माँगा था कि जब तक पृथ्वी और पर्वत रहे, सूर्य–चन्द्रमा तथा नक्षत्र वर्तमान रहें तब तक गया की शिला पर ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर का निवास रहे। नैमिष, पुष्कर, गंगा, प्रयाग, अविमुक्त, तथा स्वर्ग, अन्तरिक्ष और भूमण्डल के विभिन्न तीर्थ इस तीर्थ में अविस्थत होकर मनुष्यों का कल्याण करें।[12] इस तीर्थ के महत्ता–विषयक स्थल विष्णु, मत्स्य और ब्रह्माण्ड़ पुराणों में भी मिलता है। प्रस्तुत विषय को व्यक्त करते हुए 'वायु पुराण' में 'गया' का श्राद्ध पितरों के आह्लाद का कारण माना गया है। 'मत्स्य पुराण' में वर्णित है कि 'गया' पितरों का तीर्थ है। यह पुण्य क्षेत्र सभी तीर्थों की अपेक्षा श्रेष्ठ है।[13] 'ब्रह्माण्ड पुराण' में इसका उल्लेख जामदग्न्य की कथा के अन्तर्गत हुआ है इसमें आख्यात है कि पितरों का तृप्ति–प्रद ऐसा तीर्थ भुवन में अन्यत्र नही है।

4. मथुरा

'विष्णु पुराण' के अनुसार मधुरा (मथुरा) की ख्याति पहले मधुवन के नाम से थी। इसका कारण यह है कि यहाँ मधु–नामक दैत्य रहता था। यहीं पर शत्रुघ्न ने लवण नामक दैत्य को मारकर मधुरा (मथुरा) नामक पुरी बसाई थी।[14] 'विष्णु पुराण' की भाँति 'वायु' और 'ब्रह्माण्ड' पुराण में भी मथुरा की स्थापना का श्रेय शत्रुघ्न को प्राप्त है।[15] इसकी धार्मिक प्रसिद्धि पर प्रकाश डालते हुए 'विष्णु पुराण' में उल्लेख आया है कि यहाँ विष्णु का सामीप्य सदैव रहता है। पाप–शमन के लिये प्रर्याप्त इस तीर्थ में ध्रुव ने तपश्चर्या की थी। अन्यत्र वर्णन आता है कि ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी को मथुरा के यमुना जल में स्नान कर हरि–दर्शन में महान फल मिलता है –

यज्ज्येष्ठशुक्लद्वादश्यां स्नात्वा वै यमुनाजले।
मथुरायां हरिं दृष्टवा प्राप्नोति पुरुषः फलम्।।[16]

5. पुष्कर

'विष्णु पुराण' में पुष्कर क्षेत्र–वासी के धार्मिक कृत्यों में उपवास की ओर संकेत किया गया है। 'मत्स्य पुराण' का कथन है कि पुष्कर में देवी उपासना पुरुहूता के नाम से होती है – 'पुष्करे पुरुहूतेति केदारे मार्गदायिनी।[17] वायु और ब्रह्माण्ड पुराणों के अनुसार पुष्कर में आचरित श्राद्ध और तपस्या अक्षय एवं महान फल के विधायक होते है। महाभारत में वर्णन आया है कि प्राचीन काल में ऋषियों के साथ देवताओं ने महान् पुण्य से युक्त होकर पुष्कर में सिद्धि प्राप्त की थी। मनीषियों का कहाना है कि पितर और देवतों की अर्चना में रत होकर, जो मनुष्य यहाँ स्नान करता है, उसे अश्वमेघ का दश–गुणिन फल मिलता है।[18]

6. द्वारिका

विष्णु पुराण के अनुसार श्री कृष्ण ने समुद्र से बारह योजन भूमि आयाचित कर द्वारकापुरी को निर्मित किया था –

इति संचित्य गोविन्दो योजनानां महोदधिम्।
ययाचे द्वादश पुरीं द्वारकां तत्र निर्ममे।।[19]

द्वारका की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए इस पुराण के प्रसंगान्तर में विवृत्त है कि समस्त क्षेत्र के समुद्र प्लावित होने पर भी श्री कृष्ण के भवन का अस्त्वि भक्तों के हितार्थ बना रहेगा।[20] 'मत्स्य पुराण' में द्वारका के लिए कृष्णतीर्थ नाम प्रयुक्त है। 'स्कन्द' तथा 'गरुड़' जैसे उतरवर्ती पुराणों में इसे मोक्षदायक पुरी कहा गया है।

7. कुरुक्षेत्र

'विष्णु पुराण' में उल्लेख आया है कि धर्मक्षेत्रीय कुरुक्षेत्र को नृप संवरण के पुत्र कुरु ने स्थापित किया था 'संवरणात्कुरुः य इदं धर्मक्षेत्रंचकार'[21] अन्यत्र कुरुक्षेत्र में उपवास करना फलदायक बताया गया है। 'वायु' और 'ब्रह्माण्ड' पुराणों में सुतीर्थ शब्द कुरुक्षेत्र के विशेषणार्थ प्रयुक्त है। इसी प्रसङ्ग में निर्देशित है कि कुरुक्षेत्र में पितरों की पूजा से सत्पुत्र पितृऋण से मुक्त हो जाता है।[22] 'मत्स्य पुराण' के अनुसार कुरुक्षेत्र तीनों लोकों में सर्वोत्कृष्ट तीर्थ है।[23]
इस स्थल पर उल्लेखनीय है कि धर्म के प्रतिष्ठित केन्द्रों में कुरुक्षेत्र का वर्णन ब्राह्मण ग्रन्थों से ही मिलने लगता है। 'शतपथ ब्राह्मण' के अनुसार देवताओं ने कुरुक्षेत्र में यज्ञ सम्पन्न किया था। वेदोत्तरवर्ती ग्रन्थों में महाभारत के प्रसङ्गों से इसके धार्मिक गौरव की महता को स्पष्ट किया जा सकता है। 'वनपर्व' में कहा है कि जो व्यक्ति प्रशंसनीय कुरुक्षेत्र जाते है, उन्हें सभी पापों से मुक्ति मिलती है और जो मनुष्य सदा यह कहता है कि – 'कुरुक्षेत्र जाऊगां', 'कुरुक्षेत्र में निवास करूगां' वह सभी पापों से मुक्त हो जाता है –

ततो गच्छेत् राजेन्द्र कुरुक्षेत्रमभिष्टुतम्।
पापेभ्यो विप्रमुच्यन्ते तद्गताः सर्वजन्तवः।।[24]

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि भारत में स्थित प्राचीन तीर्थों में कुरुक्षेत्र का माहात्म्य आज भी सुरक्षित है। चाहे सरस्वती के उद्गम की बात हो या ग्रहण काल स्नान की बात, चाहे व्यास रचित महाभारत के प्रमुख स्थान की बात हो, सभी रूपों में कुरुक्षेत्र भारत ही नहीं, अपितु विश्व में इस तीर्थ का महनीय स्थान है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. दश तीर्थ सहस्राणि षष्ठिकोटयस्तथा पराः।
   तेषां सांनिध्यमत्रैव ततस्तु कुरुनन्दन।। मत्स्य पुराण 106/23
2. तथा सर्वेषु लोकेषु प्रयागं पूजयेद् बुधः।
   पूज्यते तीर्थराजस्तु सत्यमेव युधिष्ठिर।
   ब्रह्मापि स्मरते नित्यं प्रयागं तीर्थमुत्तमम्।
   तीर्थराजमनुप्राप्य न चान्यत्किंचिदर्हति।। मत्स्य पुराण 106/14-15
3. व्याधितो यदि वा दीनोवृद्धोवाऽपि भवेन्नरः।
   गंगायमुनयोर्मध्ये यस्तु प्राणान्परित्यजेत्।। मत्स्य पुराण 105/3-7
4. (क) वायु पुराण 77/92
   (ख) ब्रह्माण्ड पुराण 3/13/100
5. अनुश० पर्व० 25/36-38
6. समुद्रपत्न्योर्जलसन्निपाते पूतात्मनामत्र किलाभिषेकात्।
   तत्त्वावबोधेन बिनापि भूयस्तनुत्यजां नास्ति शरीरबन्धः।। रघु० व० 13/17
7. रघु० व० 180-55
8. मत्स्य पुराण 181/19-29
9. (क) वायु पुराण 77/93
   (ख) ब्रह्माण्ड पुराण 3/13/101
10. महाभारत, वनपर्व 84/79
11. वायु पुराण 105/21
12. वायु पुराण 106/64

13. पितृतीर्थे गया नाम सर्वतीर्थ वरं शुभम्।। मत्स्य पुराण 22/4
14. विष्णु पुराण 1/12/4
15. (क) वायु पुराण 88/185
    (ख) ब्रह्माण्ड पुराण 3/63/186
16. विष्णु पुराण 6/8/31
17. मत्स्य पुराण 13/30
18. महाभारत, वनपर्व 83/26/27
19. विष्णु पुराण 5/23/13
20. विष्णु पुराण 5/37/36
21. विष्णु पुराण 4/19/76/77
22. वायु पुराण 77/66
23. मत्स्य पुराण 106/03
24. वन पर्व 83/1-2